पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय मुज़फ़्फ़रनगर
विद्यालय ई-पत्रिका 'किसलय'
सत्र 2023-24

Ph No.: 0131-2620297
E-mail Id:kvmzn6@gmail.com
Website:muzaffarnagar.kvs.ac.in

संपादक मण्डल

मुख्य संरक्षक

श्री शेक ताजुद्दीन

उपायुक्त,

के.वि.सं. , आगरा संभाग

संरक्षक

श्री ब्रिजेशपाल सिंह

प्राचार्य ,के.वि. मुज़फ्फरनगर

प्रधान संपादक

ओम प्रकाश

स्नातकोत्तर शिक्षक

संपादक

1.श्रीआदेश कुमार , स्नातकोत्तर शि. (अंग्रेजी)

2.श्रीमती शिखा, प्र.स्ना. शि.(संस्कृत)

3.श्रीमती भावना शर्मा , प्र.स्ना. शि. (हिन्दी)

4.श्रीमती सुमिता गुप्ता प्र.स्ना.शि. (अंग्रेजी)

5.श्रीमती अंजली हेम्ब्रम प्र.स्ना.शि. (अंग्रेजी)

6.श्री प्रमोद कुमार प्र.स्ना.शि. (अंग्रेजी)II

7.श्री वीरेन्द्र कुमार, प्र.स्ना.शि. (संस्कृत) II

8.श्रीमती ज्योति, प्र.स्ना.शि. (अंग्रेजी)II

9.श्री दशरथ मीणा, प्र.स्ना.शि.(हिन्दी)II

10.श्री संजीव कुमार,प्र.स्ना.शि. (हिन्दी)II

11.सुश्री निधि, प्राथमिक शि.

विद्यार्थी संपादक

1. कु. अंतराक्षी मलिक12 'स'
2. आर्यन त्यागी12 'ब'

साज सज्जा एवं कवर

श्री संदीप कुमार पाल

अरविन्द मल्लप्पा बंगारी आई. ए. एस.
जिला मजिस्ट्रेट
एवं
अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधन समिति
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, मुज़फ़्फ़रनगर

संदेश

विद्यालय पत्रिका विद्यालय गतिविधियों का प्रतिबिंब होती है। विद्यालय सक्रियता एवं रचनात्मकता की झलक देखने को मिलती है। विद्यालय पत्रिका बच्चों को अपनी प्रतिभा , योग्यता एवं रचनात्मकता की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है।

बच्चे विभिन्न गतिविधियों (कविता, कहानी, एकांकी , संस्मरण, निबंध, अनुच्छेद, अनुभव, ड्रॉइंग, पेंटिंग, कार्यानुभव , नवीन प्रयोग) के माध्यम से अपनी प्रतिभा एवं रचनात्मकता का परिचय देते हैं। विद्यालय द्वारा पत्रिका का ई-प्रकाशन कागज़ की बचत एवं पेड़ संरक्षण की दृष्टि से सराहनीय प्रयास है। विभिन्न माध्यमों में बच्चों के मनोभावों की सृजनात्मक, कल्पनात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति सराहनीय होगी।

मैं ऐसी आशा करता हूँ कि बच्चों की यही सृजनात्मक शक्ति भविष्य में समाज सेवक, चिंतक, वैज्ञानिक ,चिकित्सक, कवि –लेखक के रूप में उभरकर देश प्रगति में सहायक सिद्ध होगी।

विद्यालय के प्राचार्य ,संपादक मंडल, सभी शिक्षक- शिक्षिकाओं एवं भारत के भविष्य नौनिहाल छात्र-छात्राओं को विद्यालय ई-पत्रिका 'किसलय' के सफल प्रकाशन की अनंत शुभकामनाएँ।

गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में-

" कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करहिं सो तस फल चाखा। "

अरविन्द मल्लप्पा बंगारी आई.ए.एस.

अध्यक्ष, वि. प्र. समिति

पीएम श्री के. वि. मुज़फ्फरनगर

अध्यक्ष/Chairman
विद्यालय प्रबन्ध समिति
Vidyalaya Management Committee
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय मुज़फ्फरनगर
PM Shri Kendriya Vidyalaya Muzaffarnagar

शेक ताजुद्दीन
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
आगरा संभाग, आगरा

संदेश.....

हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय, मुज़फ़्फ़रनगर द्वारा अपनी वार्षिक ई-पत्रिका (किसलय) 2023-24 का प्रकाशन करवाया जा रहा है। समग्र संभावनाओं से समन्वित बाल कलाकारों एवं सुधी शिक्षकों के भाव एवं विचारों काप्रतिबिंब स्वरूप विद्यालय की वार्षिक ई-पत्रिका आपके समक्ष है। किसी भी विद्यालय की पत्रिकाउस विद्यालय का दर्पण होती है। पत्रिका से विद्यालय की सांस्कृतिक, शैक्षणिक,खेलकूद एवं अनेकरचनात्मक गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक अभिरुचि का भी पता चलता है। विद्यालयपत्रिका इस बात का प्रमाण है कि शिक्षार्थियों के समुचित सकारात्मक, सर्वांगीण एवं सृजनात्मक विकास हेतु विद्यालय परिवार प्रतिबद्ध है।

पत्रिका प्रकाशन पर मैं उन सभी अभिभावकों, शिक्षार्थियों एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं, जिन्होंने पत्रिका हेतु अपनी रचनाएं एवं कलाकृतियाँ प्रकाशनार्थ देकर प्रोत्साहित किया है, उन सभी के प्रति विनम्र साधुवाद ज्ञापित करता हूँ। इस ई-पत्रिका के प्रकाशन से छात्रों मेंनिहित सृजनात्मक प्रतिभा उभर कर सामने आ सकेगी तथा इन्हीं बाल कलाकारों में से भविष्य मेंकुछ अच्छे चित्रकार, पत्रकार, लेखक व कवि रुप में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचानबनाने में कामयाब होंगे। यह मेरा सहज विश्वास है।

प्राचार्य, संपादक मण्डल, शिक्षक एवं शिक्षार्थियों को विद्यालय ई-पत्रिका 'किसलय' के सफल प्रकाशन की अनंत शुभकामनाएँ।

डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम जी के शब्दों में-" सपने वो नहीं, जो आप सोते वक़्त देखते हैं, सपने तो वो होते हैं, जो आपको सोने ही नहीं देते। "

(शेक ताजुददीन)
उपायुक्त

ब्रिजेशपाल सिंह
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, मुज़फ़्फ़रनगर

संदेश.....

प्रसन्नताका विषय है कि सत्र 2023-24 की विद्यालय पत्रिका का ई- प्रकाशन करते हुए मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं। यह पत्रिका बाल कलाकारों एवं शिक्षाविदों की भावनाओं, विचारों एवं अंतर्निहित क्षमताओं का साकार स्वरूप है। विद्यालय पत्रिका विद्यालय की शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक विभिन्न गतिविधियों का दर्पण होती है। विद्यार्थियों को अधिगम के समान अवसर उपलब्ध कराना एवं उनमें निहित योग्यताओं का विकास करने के लिए विद्यालय अनवरत प्रयत्नशील है। आज का विद्यार्थी आने वाले कल का आदर्श नागरिक है , राष्ट्र का गौरव है । अत: शिक्षार्थियों का सर्वांगींण विकास करना हमारा प्रथम कर्तव्य है।

विद्यालय पत्रिका का उद्देश्य शिक्षार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं एवं योग्यताओं को मंच उपलब्ध कराना है । प्रस्तुत पत्रिका में प्रकाशित बाल-रचनाकारों की रचनाएं निश्चित रूप से हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी साहित्य की विभिन्न विधाओं का रसपान कराने में सक्षम होंगी।

विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्ति संवेदन शीलता, कल्पना, एकता ,राष्ट्र प्रेम एवं विश्व बंधुत्व की भावना से समन्वित है। छात्र-छात्राओं की अप्रतिम प्रस्तुतियोंगतिविधियों एवं कलाकृतियों को सभी सुधी पाठकों की सहज संवेदना स्वरूप स्नेह सुलभ होगा , ऐसा मेरा सहज विश्वास है।

विद्यालय ई- पत्रिका के प्रकाशन में जिन शिक्षक-शिक्षिकाओं, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग रहा है, वे सभी साधुवाद के पात्र हैं। सभी शिक्षार्थियों को सुन्दर,सुखद,सफल एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं ।

कबीरदास जी के शब्दों में –
"जिन खोजा तिन पाईंया, गहरे पानी पैठ।
मैं बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ ।।"

प्राचार्य/Principal
केन्द्रीय विद्यालय
Kendriya Vidyalaya
मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)
Muzaffarnagar (U.P.)

बृजेशपाल सिंह
प्राचार्य

ओम प्रकाश गोस्वामी

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, मुज़फ़्फ़रनगर

संपादक की कलम से...

विद्यालय पत्रिका शिक्षण एवं शिक्षणेतर विद्यालयी क्रियाकलापों का प्रतिबिंब होती है,जिससे विद्यार्थियों की शारीरिक एवं मानसिक दक्षताओं का पता चलता है। विद्यालय पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति, सृजनात्मकता एवं संवेदनशीलता के भाव का विकास कर उनको समुचित दिशा प्रदान करते हुए समाज का आदर्श नागरिक बनाना है।

प्रस्तुत पत्रिका में विद्यार्थियों ने हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा में साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे कि कहानी, कविता ,अनुच्छेद, यात्रा साहित्य, पर्यावरण परक लेख / रचना द्वारा रचनात्मकता का परिचय दिया है, जिनसे सहयोग, सम्मान, स्नेह, सत्य , स्वच्छता,पर्यावरण संरक्षण, एकता, अखंडता, करुणा, अहिंसा , भाईचारा एवं देश प्रेम की भावना का संदेश मिलता है।

मैं सुधी पाठकों से अनुरोध करना चाहूंगा कि रचनाओं को पढ़कर उनमें निहित संवेदनाओं को अंगीकार करते हुए त्रुटियों को नज़र अंदाज कर बाल कलाकारों को अपना शुभाशीष प्रदान करें।

अंत में, मैं प्राचार्य महोदय श्री ब्रिजेशपाल सिंह जी का हार्दिक साधुवाद करता हूं,जिनका समय-समय पर समुचित मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा । मैं संपादक मंडल एवं सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं का भी धन्यवाद ज्ञापन करता हूं ,जिनके अथक प्रयास से ई-पत्रिका प्रकाशन कार्य समय पर संभव हो सका ।

सभी बाल कलाकारों का हार्दिक आभार एवं अभिनंदन ।

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

ओम प्रकाशगोस्वामी
स्नातकोत्तर शिक्षक
(हिन्दी)

विद्यालय के होनहार

SAKSHAM SINGH **XII (SCIENCE)**	**UDIT KUMAR RANA** **XII (SCIENCE)**	**PRANAV KUMAR** **XII (SCIENCE)**
94.4 %	**92 %**	**91.6 %**

GAURAV SINGH **XII(COMMERCE)**	**KARTIK DUTT** **XII(COMMERCE)**	**PALAK VERMA** **XII(COMMERCE)**
89.8 %	**83.4%**	**79.6 %**
YASH MALIK **X (Ist Shift)**	**VARHAMNA ALI** **X** (Ist Shift)	**ABHAY RAJ SINGH** **X** (Ist Shift)
94.4%	**94.2 %**	**94 %**
VINAYAK KUMAR **X (IInd SHIFT)**	ANGEL X (IInd SHIFT)	TEJASVI PANWAR X (IInd SHIFT)
96.6 %	**93.6 %**	**90.8 %**

हिन्दी अनुभाग

कल एक झलक ज़िंदगी को देखा,

वो राहों पे मेरी गुनगुना रही थी।

फिर ढूँढा उसे इधर उधर,

वो आँख मिचौली कर मुस्कुरा रही थी।

एक अरसे के बाद आया मुझे क़रार,

वो सहला कर मुझे सुला रही थी।

हम दोनों क्यूं खफा हैं एक दूसरे से,

मैं उसे और वो मुझे समझा रही थी।

मैंने एक दिन पूछ ही लिया उससे,

क्यों इतना दर्द दिया कम्बख्त तूने ?

वो हंसीं और बोली- मैं ज़िंदगी हूँ पगली,

तुझे जीना सिखा रही थी।

अंतराक्षी मलिक

कक्षा- १२ स प्रथम पाली

लक्ष्य

वह जन्म क्या ? जिसका कोई लक्ष्य ना हो ,

वह पथ क्या ? जो पथरीला ना हो, वो जीवन क्या जिसमें संघर्ष ना हो।

वह सूर्य क्या ? जिसमें तपन ना हो, वह चांद क्या जिसमें शीतलता ना हो,

वह बरसात क्या ? जिसमें बिजली ना हो, वो जीवन क्या जिसमें प्रकाश ना हो।

वह बाग क्या ? जिसमें हरियाली ना हो, वो डाली क्या जिसमें कांटे ना हो,

वह तथ्य क्या ? जिसमें तर्क ना हो, वो कार्य क्या जो संभव ना हो।

वह कर्म क्या ? जिसमें लगन ना, वो जन्म क्या जिसका कोई लक्ष्य ना हो।

अदिति कश्यप

कक्षा- 11 स प्रथम पाली

पीएम श्री के.वि. मुज़फ्फरनगर

पृथ्वी दिवस

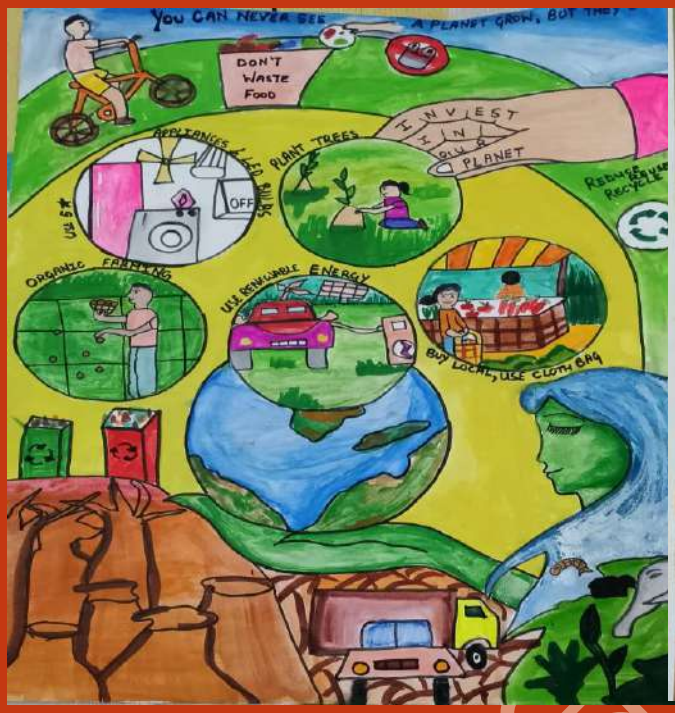
DON'T WASTE FOOD
INVEST IN OUR PLANET
PLANT TREES
ORGANIC FARMING
USE RENEWABLE ENERGY
BUY LOCAL, USE CLOTH BAG

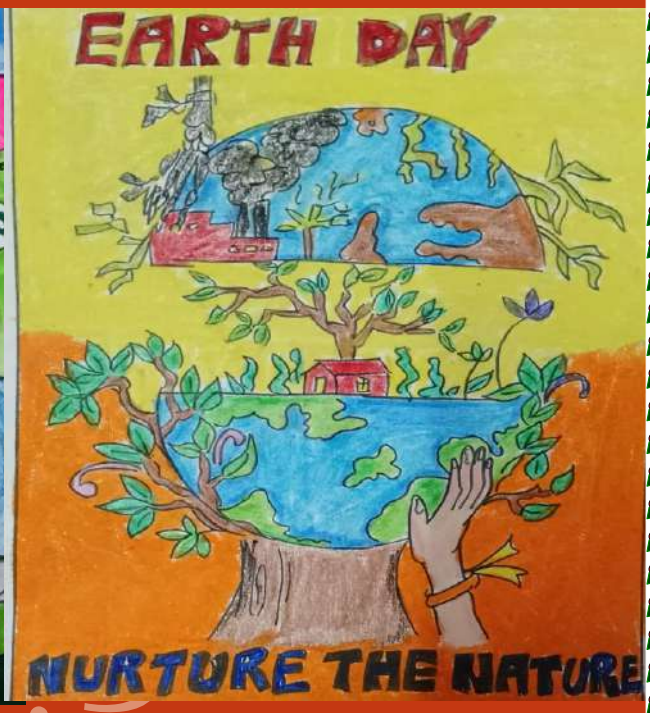
EARTH DAY
NURTURE THE NATURE

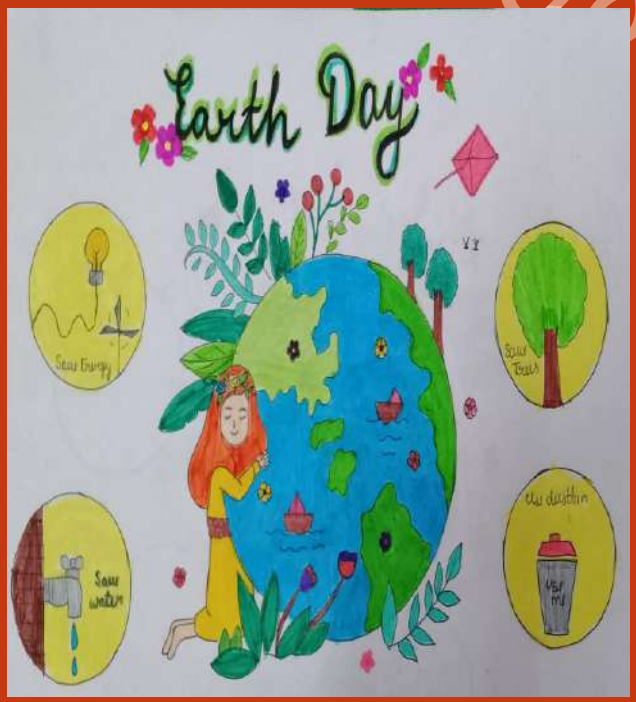
Earth Day
VI

SAVE EARTH
GO GREEN
POLLUTION IS SUICIDE
HARMFUL FOR EARTH
AND FOR YOU
IT WON'T TAKE
MUCH ENERGY TO
CONSUME
ENERGY
SAVE THE WATER
SAVE ENVIRONMENT
SAVE EARTH
THERE IS NO PLANET B

बचपन

जिंदगी ने एक दिन तलाशी ली।

कुछ लम्हे बरामद हुए।

कुछ ग़म के थे।

कुछ फटे हुए थे।

जो साबुत निकले वो बचपन के थे।

बचपन भी कितना खूबसूरत है ना।

अफ़ज़ल अली

कक्षा- १२ 'अ' प्रथम पाली

कितना अच्छा हो अगर...

कितना अच्छा हो अगर....

ना हो असमानता का विचार, ना हो संसार में भ्रष्टाचार।

कितना अच्छा हो अगर ....

इंसान की स्वतंत्रता के नाम पर मुहर न लगाई जाए ,

शिक्षा बेटियों का भी अधिकार बन जाए।

कितना अच्छा हो अगर ....

हर आदमी पेड़ लगाए, और फिर से हरियाली आ जाए।

कितना अच्छा हो अगर.....

जात पांत का ना हो किसी को अभिमान , मानव जात बन जाए इंसान का सम्मान।

कितना अच्छा हो अगर.....

राष्ट्रीय भावना बनी रहे, नव संस्कृति आलोक करे, नव भारत निर्माण !!

वरहमना अली

कक्षा- 11 ब प्रथम पाली

बचपन

एक बचपन का ज़माना था, जिसमे ख़ुशियों का ख़ज़ाना था...

चाहत चाँद को पाने की थी, पर दिल तितली का दीवाना था...

खबर ना थी कुछ सुबह की, ना शाम का ठिकाना था...

थक कर आते थे स्कूल से मगर, खेलने भी तो जाना था...

माँ की कहानी थी, परियों का फ़साना था

बारिश में कागज की कश्ती, हर मौसम ही सुहाना था,

ना रोने की वजह थी, ना हँसने का बहाना था...

क्यूँ हो गये हम इतने बड़े, इससे अच्छा तो बचपन का जमाना था...

रुकय्या खान

कक्षा-11 ब प्रथम पाली

भरोसे की बारिश

किसी गाँव में एक साधु रहता था। वह जब भी नाचता बारिश होती। गाँव में जब भी बारिश की ज़रूरत होती, ग्रामीण उससे नाचने का अनुरोध करते। एक बार शहर से चार लड़के गाँव घूमने आए। उन्होंने सुना कि साधु के नाचने से बारिश होती है तो यकीन नहीं किया। उन्होंने गाँव वालों से कहा कि हम भी नाचेंगे और अगर हमारे नाचने से बारिश नहीं हुई तो साधु के नाचने से भी नहीं होगी। लड़कों ने नाचना शुरू किया। एक घंटा बीतते - बीतते सभी थककर बैठ गए, पर बारिश नहीं हुई। अब साधु ने नाचना शुरू किया। एक घंटा बीता, बारिश नहीं हुई। दो घंटे बीते बारिश नहीं हुई। पर साधु रुका नहीं। वह लगातार बिना थके नाचता ही रहा। आश्चर्य की बात है कि शाम होते - होते बादल गरजने लगे और ज़ोरों की बारिश शुरू हो गई। लड़के दंग रह गए। उन्होंने पूछा, ऐसा कैसे हुआ? साधु ने कहा- जब मैं नाचता हूँ, तब दो बातों का ध्यान रखता हूँ। पहली तो यह कि जब मैं नाचूँगा तब बारिश होनी ही है और दूसरी यह कि जब तक बारिश न हो, तब तक मैं नाचता रहूँगा। यह प्रसंग बताता है कि समाधान बारिश में नहीं, विश्वास और दृढ़ता में है।

आयुष गौतम

कक्ष - 11 B प्रथम पाली

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

योग दिवस

केन्द्रीय विद्यालय मुजफ्फरनगर
योग सप्ताह

केन्द्रीय विद्यालय, मुजफ्फरनगर
९ वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
योग सप्ताह
(15/06/2023 से 21/06/2023)

केन्द्रीय विद्यालय, मुजफ्फरनगर
योग सप्ताह

कुछ देर तो लगती है...

यादों को भुलाने में कुछ देर तो लगती है...

आँखों को सुलाने में कुछ देर तो लगती है।

किसी शक्स को भुला देना इतना आसान नहीं होता,

दिल को समझाने में कुछ देर तो लगती है।

भरी महफ़िल में जब कोई अचानक याद आए,

फिर आँसू छुपाने में कुछ देर तो लगती है।

जो शक्स जान से प्यारा हो.. अचानक दूर हो जाए...

दिल को यकीन दिलाने में कुछ देर तो लगती है।

आकाश पाल

कक्षा – 11 ब प्रथम पाली

निराश न होना कभी

निराश न होना कभी

जीवन की भागदौड़ में,

व्यवस्तता के माहौल में,

प्रतियोगिताओं की होड़ में,

हार कर न बैठना कभी.... निराश न होना कभी।

जब चारों ओर अंधेरा हो,

जब चिंताओं ने घेरा हो,

सूर्य की बस एक किरण,

सुलझा देती हर उलझन.... हार कर कभी बैठना नहीं,

किसी ने कहा है बिलकुल सही,

कोशिश करने वालो की कभी हार नहीं होती,

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती।

समय सदा एक सा नहीं रहता,

हार जीत, दोनों का दौर है चलता रहता।

हार से निराश होना नहीं.... जीत का विश्वास खोना नहीं।

उठो, प्रयास करो, वक्त अभी बीता नहीं.....

गीता श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

सलोनी दीक्षित

कक्षा-12 स प्रथम पाली

मेरे अहसास

जो ख्वाब सजाते बरसों में,
एक पल में टूट जाते हैं।
जो बनकर आते हैं अपने,
बेगाने वो बन जाते हैं॥

तिनका तिनका चुन चुनकर हम,
आशिंया एक बनाते हैं।
एक पल में आती है आंधी,
वह तिनके भी खो जाते हैं॥

बस रह जाती उनकी यादें,
जो बरसों तक तड़पती है।
हंसते गाते एक जीवन को,
दुख से घायल कर जाती है॥

मत देखो ऐसे सपने,
जो पीड़ा दे जीवन भर की।
झूठे रंग है इस जीवन के,
धुंधले पल में हो जाते हैं॥

नाम- वैष्णवी भाटिया

कक्षा - ग्यारहवीं 'ब'सदन- टैगोर

पीएम श्री के.वि.मुज़फ़्फ़रनगर

मेरी साथी "

तुम ना होती तो मैं
कितनी अकेली होती।
दर्द में लिपटी सिमटी
एक पहेली होती॥

दर्द के सहरा में भटकती
जिंदगी ये मेरी।
तुम जो मेरी जिंदगी में
ना आई होती॥

डूब गयी होती
जिंदगी की ये किश्ती।
तुम जो ना साहिल
बनके मिली होती॥

राह में यूंही भटका करती
दीवानी बनकर।
तुमने जो मुझे
राह ना दिखाई होती॥

तुम ना होती तो
आज मैं खुद से ही पराई होती॥

नाम - वैष्णवी भाटिया
कक्षा- ग्यारहवीं 'ब' सदन- टैगोर

पीएम श्री के.वि. मुज़फ्फरनगर

नशा मुक्त भारत अभियान

सपने"

सपने तो होते ही हैं
टूट जाने के लिए।
साथी तो मिलते ही है
छूट जाने के लिए॥

वरना क्या बात है जो
दूर हो जाते हैं सब।
रिश्ते बनते ही है
टूट जाने के लिए॥

क्यूं बनाया करते हैं
लोग तिनकों के आशिंया।
तिनके तो होते ही हैं
टूट जाने के लिए॥

मंजिल तो दूर कहीं
तक नज़र नहीं आती।
फिर चलते हैं राही मंजिल
को अपने पाने के लिए॥

नाम - वैष्णवी भाटिया
कक्षा - ग्यारहवीं 'ब'
सदन- टैगोर

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

जीवन की राह

जीवन की राह में चलते रहो,

कभी न रुकना, आगे बढ़ते रहो।

हर मुश्किल को हंसकर झेलो,

सपनों की उड़ान भरते रहो।

आंधी आए या तूफान हो,

हिम्मत को कभी न खोना।

हार के बाद ही जीत है,

इस सच को तुम मानो।

सपनों का हो हर पल साथ,

मन में हो अटल विश्वास।

हौसलों की हो ऊँची उड़ान,

मंजिल को तुम पा ही लोगे एक दिन।

खुद पर तुम भरोसा रखना,

हर पल आगे बढ़ते रहना।

जीवन की राह में चलते रहो,

कभी न रुकना, आगे बढ़ते रहो।

लाखन त्यागी

कक्षा- 12 ब प्रथम पाली

मां

मां देती हैं हमें संस्कार ,

पर हम देते हैं उन्हें नकार।

फिर हमें पछतावा होता ,

तब समझमें हमें आता।

पीएम श्री के.वि. मुजफ्फरनगर

मां करती हैं हमसे बहुत प्यार ,

हमें भी करेंगे उनकी सेवा और सत्कार।

चाहें हों खांसी या फिर जुकाम ,

मां नहीं छोड़ती हैं अपना काम।

मां कहतीं हैं- पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे महान,

पर हम नहीं समझ पाते हैं उनका ज्ञान।

मां ने हमें सिखाया है उड़ना पतंग ,

अब हम नहीं करेंगे मां को तंग।

मां की ममता में होती है बड़ी शक्ति ,

उनका कहा न मानकर हम कर देते हैं बहुत बड़ी गलती।

अनुराग गोस्वामी

कक्षा : 6 A प्रथम पाली

आलसी शेर और खरगोश

बहुत पुरानी बात है एक जंगल था। उस जंगल का राजा एक शेर था। वह बहुत आलसी था। वह इतना आलसी था, कि दिन भर सोता रहता था। न तो उसे अपने खाने की फिकर ना उसे अपने जंगल की फिकर। लेकिन एक दिन वह अपने जंगन में घूम रहा था। घूमते – घूमते उसे एक खरगोश मिला। वह उसके पीछे जा रहा था। खरगोश को एक दम शेर का पता लग गया कि शेर उसके पीछे आ रहा है। वह वहां से डरकर भाग गया और फिर शेर वहां से चला गया। अगले दिन शेर फिर आया। रोज ऐसा ही चलता रहा। एक दिन फिर शेर ने खरगोश को पकड़ लिया और अपनी गुफा में ले गया। खरगोश को लग रहां था कि अब वह मरने वाला है, लेकिन खरगोश को कहां पता था कि वह शेर आलसी हैं। तीन चार दिन खरगोश गुफा में ही रहां लेकिन शेर ने उसे नहीं मारा। क्योंकि खरगोश उससे नहीं डरा जबकि जंगल के सारे जानवर उससे डरते थे। फिर धीरे-धीरे उन दोनों की दोस्तों हो गई और वे दोनों साथ रहने लगे।

अमन

कक्षा: 8 ब प्रथम पाली

पहेलियां

१-ऐसी कौन सी चीज है जिसकी परछाई नहीं होती?

उत्तर - सड़क

२- ऐसी कौन सी चीज है जो सर्दी हो या गर्मी हमेशा ठंडी रहती है?

उत्तर - बर्फ

३- वह क्या है जो रात में रोती है और दिन में सोती है?

उत्तर - मोमबत्ती

४- शरीर का कौन सा अंग सबसे ज्यादा चमकता है?

उत्तर - आंख

५- ऐसा क्या है जो ना कभी था और ना कभी होगा, लेकिन वह है?

उत्तर - आने वाला कल

६- लाल घोड़ा रुका रहे और काला घोड़ा भाग जाए - बताओ कौन?

उत्तर - आग और धुआं

७- न बोल पाती हूं और न सुन पाती हूं, बिन आंखों की हूं लेकिन सबको राह दिखाती?

उत्तर - पुस्तक

८- ऐसी कौन सी जगह है जहां पर सड़क है पर गाड़ी नहीं, जंगल है पर पेड़ नहीं, शहर है पर घर नही?

उत्तर - नक्शा

९- एक पहेली मैं बुझाऊं सिर को काट नमक छिड़काऊ?

उत्तर - खीरा

१०- एक पैर है, काली धोती, जाड़े में वह हरदम सोती, गर्मी में है छाया देती, सावन में वह हरदम रोती?

उत्तर - छतरी

श्रृष्टि पुंडीर

कक्षा- 6 अ प्रथम पाली

पीएम श्री के.वि.मुज़फ़्फ़रनगर

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

चाँद पर जीवन

एक था राजू, रहता था वो अपनी माँ के संग,

रो रो कर कर दिया उसने उनको तंग।

कहता था, "जाउंगा चंदा मामा के पास"

रोते रहता ना लेता एक भी सांस |

एक रात चंदा मामा ने तंग आकर भेजा एक तारे को पृथ्वी पर,

कि ले आऊ राजू को पृथ्वी पर जाकर।

राजू हुआ बहुत खुश अपने चंदा मामा को पाकर।

राजू का चाँद पर जीवन बहुत मज़ेदार है ,

खेलता रहता है हर दम वो रुकता ना एक भी बार है।

यूं तो खुश रहता है राजू ,

मगर जब उसको याद आता है कि कोई रहता ना आजू बाजू।

उसको आती है माँ की याद,

जब रहता था वो उनके साथ |

कभी उसको चाँद बिलकुल भी नही भाँता है,

कभी उसको चाँद पर बहुत मज़ा आता है |

अकरम अली

कक्षा- 6 अ प्रथम पाली

कहानी : हंस और उल्लू

बहुत समय पहले एक झील के किनारे हंस रहता था। एक उल्लू भी वहीं आकर रहने लगा। वह दोनों साथ में खुशी-खुशी रहने लगे। जब गर्मियों का मौसम आया तो उल्लू वापस अपने घर जाने के बारे में सोचने लगा। उल्लू ने हंस से भी साथ चलने को कहा। हंस बोला, जब नदी सूख जाएगी तो मैं तुम्हारे पास आ जाऊंगा। जब नदी सूख गई तो हंस उल्लू के पास उसके बरगद के पेड़ पर पहुंच गया। हंस जल्दी सो जाता था। तभी कुछ राहगीर वहां से निकले और आराम करने के लिए उस पेड़ के नीचे बैठ गए। उसे राहगीर को देखकर उल्लू जोर से चिल्लाया। राहगीर ने उसे अपशगुन माना और उल्लू पर तीर से निशाना मार दिया। उल्लू को तो अंधेरे में दिखाई देता था, इसलिए वह तीर से बच गया और उड़ गया। उसके बदले तीर हंस को लग गया और वह मर गया। इस कारण सही कहा गया है कि नई जगह पर हमेशा सतर्क रहना चाहिए।

नाम हर्षवर्धन पाल

कक्षा- 7 ब प्रथम पाली

राम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

दुर्घटना में मिली सहायता

यह दुर्घटना ऐसी है जिसे मैं कभी भुला नहीं सकती ! इस दुर्घटना की शुरुआत यहां से होती है ! एक बार मैं और मेरे पापा जी नानी के घर से आ रहे थे ! तब पापा जी ने आते समय गाड़ी में पेट्रोल पंप से पेट्रोल भरवाया था। पेट्रोल भरवाने के कुछ देर बाद बोनेट से धुआं निकलना शुरू हुआ तब मेरे पापा जीने देखा कि अचानक गाड़ी में आग लगने लगी और अंदर से लॉक लग गया और हम गाड़ी में बंद हो गए ! हम घबरा गए और हमें लगने लगा अब हम नहीं बच पाएंगे ! जब लोगों की दृष्टि हमारी ओर पड़ी तब उन्होंने गाड़ी का दरवाजा तोड़कर हमें निकला जिससे हमारी जान तो बच गई लेकिन वह आग रुकने का नाम नहीं ले रही थी, बल्कि बढ़ती ही जा रही थी ! तब हमने फायर ब्रिगेड को बुलाया और उन्होंने आग बुझाई और हमारी जान बच गई !

आईन हूर

कक्षा-7 ब प्रथम पाली

कुछ करना है तो

कुछ करना है तो डटकर कर,
इस दुनिया से हटकर कर !
इस दुनिया से बिल्कुल ना डर !!
जो कहता है उसे कहने दे,
पीछे इसको रहने दे !
तू बढ़ता जा, तू बढ़ता जा ,
सारी सीढ़ियां चढ़ता जा !
अर्जुन सा तू लक्ष्य बना,
अपनी मंजिल खुद ही बना !
तू चलता जा, तू चलता जा ,
इस दुनिया से आगे बढ़ता जा !!

आतिका

कक्षा- 6 ब प्रथम पाली

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय मुज़फ़्फ़रनगर

अनुशासन और समय का पालन

अनुशासन और समय दोनों का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। हमें अपने जीवन में इन दोनों का ही पालन करना चाहिए। अगर हम स्कूल में अनुशासन और समय का ध्यान रखेंगे तो हमें सफलता मिलेगी। हमें समय पर अपना स्कूल का कार्य समाप्त करना चाहिए। हमारे बड़े और हमारे अध्यापक हमें जो बातें बताते हैं, जो अनुशासन सिखाते हैं, हमें उन्हें मानना चाहिए। हमें समय पर अपने विद्यालय जाना चाहिए और समय पर ही अपने घर जाना चाहिए। हमें प्रतिदिन पढ़ाई करनी चाहिए। अगर हम समय पर पढ़ाई नहीं करेंगे तो हमें असफलता हाथ लगेगी और हमारा भविष्य नष्ट हो जाएगा। समय बहुत कीमती है, समय का सदुपयोग करना चाहिए।

अविका पुंडीर

कक्षा- 6 ब प्रथम पाली

चार पहेलियां

1. एक गुफा के दो रखवाले, दोनों लंबे, दोनों काले।

2. काले घोड़े पर सफेद सवारी, एक उतरे तो दूसरे की बारी

3. एक गुफा में 32 चोर, करते दिन में काम, रात में आराम बताओ गुफा का नाम।

4. मेरे आगे पीछे बंधे हैं धागे, लोग मुझे अपनी उंगलियों से चलाते, बताओ क्या है मेरा नाम ?

उत्तर-1. मूंछें , 2. तवा रोटी , 3. मुँह, 4. कठपुतली

अग्रिम त्यागी

कक्षा - 7 ब प्रथम पाली

फौजी

हम फौजी हैं, हम फौजी हैं ,

यह देश हमारी शान है।

देश के लिए हम जीते हैं,

देश के लिए शहीद होते हैं।

सीना हमारा पत्थर का है ,

जो हमसे टकराएगा चूर चूर हो जाएगा।

सीमा पर तैनात हम ,

पीएम श्री के.वि.मुज़फ़्फ़रनगर

दुश्मन के छक्के छुड़ाते हैं।

हम फौजी हैं हम फौजी हैं,

हिमालय की बर्फ पर हम सोते हैं।

हम आसमान को भी छूते हैं,

हिंद महासागर में भी घर बनाते हैं।

हम फौजी हैं हम फौजी है....

जय हिंद

अभिनव कुलश्रेष्ठ

कक्षा-6 अ प्रथम पाली

अच्छा होता है

जिन्दगी में जो कुछ होता है,

सब अच्छे के लिए होता है।

बुरा वक्त इसलिए आता है,

ताकि हम अच्छे वक्त की कीमत जान सकें।

लोग इसलिए बदल जाते है,

ताकि हम उनके असली चेहरे पहचान सकें ,

वो क्या थे और हम क्या समझ रहे थे.....

आराध्या पाल

कक्षा-6 ब प्रथम पाली

सफलता

एक बार एक लड़की थी, जो केंद्रीय विद्यालय में पढ़ती थी। स्कूल की प्रार्थना के बाद अनाउंसमेंट हुई कि "पाठ्यक्रम सहगामी क्रिया अंतर्गत कल पानी बचाओ विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। सभी बच्चे इसमें भाग लेने की कोशिश करें।" मैंने भी इस प्रतियोगिताओं में भाग लिया और सुन्दर सा एक पोस्टर बनाया। अब बारी थी प्रतियोगिता के परिणाम की। सारे बच्चे

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

जानना चाहते थे कि इस प्रतियोगिता का विजेता कौन हैं। परिणाम घोषित होने से पहले मुझे शुरू-शुरू में बहुत घबराहट हुई लेकिन जैसे ही मेरा नाम घोषित हुआ कि- अंशी चौधरी प्रथम स्थान। मेरी खुशी का कोई ठिकाना न था, मैं उस पल की खुशी को शब्दों में बयां नहीं कर सकती। मुझे स्टेज पर बुलाया गया और सभी विजेताओं एवं प्रतिभागियों के लिए ताली बजाई गई। मेरे प्रथम आने का पल फोटो फ्रेम में सजकर हमेशा के लिए सुनहरी याद बन गया है।

अंशी चौधरी

कक्षा- 6 अ प्रथम पाली

शिक्षा का महत्त्व

किसी भी इंसान के लिए जीवन में आगे बढ़ने व सफलता प्राप्त करने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। माता-पिता, स्कूल और विश्वविद्यालय एक व्यक्ति कोशिक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। शिक्षा व्यक्ति के अंदर आत्मविश्वास, आत्मस्वीकृति, और आत्ममूल्य को जाग्रत करती है और उसे अपने परिवेश और देश दुनिया में चल रहे सामाजिक मुद्दों से अवगत और उनके बारे में जागरूक करती है। इस प्रतिस्पर्धी दुनिया में व्यक्ति का शिक्षित होना बहुत जरूरी है। अशिक्षित व्यक्ति के मुकाबले शिक्षित व्यक्ति में आत्मविश्वास अधिक पाया जाता है। शिक्षित व्यक्ति राष्ट्र के लिए एक संपत्ति है, क्योंकि वे अपनी शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकता है। शिक्षित होने का अर्थ यह नहीं कि आप अशिक्षित लोगों को नीचा दिखाएं बल्कि शिक्षित होने का अर्थ यह है कि आप दूसरों की मदद करें। अशिक्षित लोगों को बताएं कि अपने शिक्षा जैसे अमृत छोड़कर बहुत बड़ी गलती की है। उन्हें बताएं कि वह अपने बच्चों को शिक्षित बनाएं। शिक्षित व्यक्ति कुछ भी बन सकता है और मदद कर सकता है। इसलिए हमें शिक्षित होना चाहिए लेकिन किसी को नीचा नहीं दिखाना चाहिए।

सृष्टि राठी

कक्षा- आठवीं अ प्रथम पाली

वह बेटी

वह अच्छी बेटी है, सीने से लगी रहती है।

वह अच्छी बहन है , आंखों में काजल सी सजी रहती है।

वह अच्छी बहू है, सेवा में लगी रहती है।

वह अच्छी बीवी है, माथेपरसजीरहतीहै॥

वह अच्छी मां है, आंचल से ढके रहती है।

वह अच्छी शिक्षक है, पढ़ाने में लगी रहती है॥

मुसव्विरा परवीन

कक्षा- दसवीं ब प्रथम पाली

स्वतन्त्रता दिवस

यह देश हमारा है ,

हम सबको प्यारा है,

इस पर हमने अपना,

जीवन भी वारा है।

याद करो झांसी की रानी की,

उसने जीवन अपना देश के लिए वारा है,

आज भी उनकी तस्वीरों को हमने दिल में यूं ही संवारा है।

यह देश हमारा है,

हम सबको प्यारा है,

इस पर हमने अपना,

जीवन भी वारा है।

पढ़ लिख कर हम देश का नाम करेंगे रोशन,

हमने यह ही मन में ठाना है।

यह देश हमारा है ,

हम सबको प्यारा है,

इस पर हमने अपना,

जीवन भी वारा है।

अंशी

कक्षा- आठवीं अ प्रथम पाली

पानी...

पानी है हमारे जीवन का एक अनमोल हिस्सा,

पृथ्वी का है इससे एक गहरा रिश्ता।

पानी को करते हैं हम कई चीजों में इस्तेमाल,

इसके बिना लोगों का हो जाता है बुरा हाल।

आज कल पानी की हो रही है यूं ही बर्बादी,

अगर चलता रहा ऐसे ही, तो पृथ्वी से कम हो जाएगी जीवों की आबादी।

हमें होगा इसे कैसे भी करके बचाना,

पीएम श्री के.वि. मुज़फ्फरनगर

वरना बाद में पड़ेगा सबको पछताना।

जल ही जीवन है, जल है, तो कल है,

इसके बिना एक पल भी जीना मुश्किल है।

अनुपम गोस्वामी

कक्षा- आठवीं अ प्रथम पाली

ढूंढ लाऊंगा

मुश्किलें माहोल पर चाहे जितनी मंडराए।
चांदनी बिखर कर चमके वो रात ढूंढ लाऊंगा ॥
कांटे ही कांटे क्यों ना हो राहों पर।
कांटों से छीन कर फूलों की सौगात ढूंढ लाऊंगा ॥
धूमिल धरती चाहे जितनी थर थराए।
आसमान थम जाए वो ख्यालात ढूंढ लाऊंगा ॥
शोले ही क्यों ना चुभ जाएं निगाहों पर।
सूरज जल जाए वो आग ढूंढ लाऊंगा ॥
भटकते भाग्य चाहेंगे दिश में क्यों ना हों।
भाग्य बदल जाए ऐसी कोई बात ढूंढ लाऊंगा ॥
लहरे चाहे कितनी बल खाए बाहों पर।
सागर सिमट जाए वो हालात ढूंढ लाऊंगा ॥
चाहे अटल हिमालय क्यों ना आए सामने।
हिमालय को झुका दे वो हाथ ढूंढ लाऊंगा ॥
प्यासी पतझड़ पनपे चाहे बहारों पर।
पतझड़ से चुरा कर बहारों की बारात ढूंढ लाऊंगा ॥
अंधेरी घटाएं चाही कितनी मंडराएं।
निशा की कालिमा से प्रभात ढूंढ लाऊंगा ॥
छुपे चाहे जितनी मुझ से मेरी मंजिल।
किताबों के साथ मिलकर उसे ढूंढ लाऊंग

धैर्यशर्मा

कक्षा – सातवीं अ प्रथम पाली

राष्ट्रीय खेल दिवस

दुनिया...

बड़ी अजनबी सी है ये दुनिया,

बरस बहुत हो गये पर समझनापाए-

यहां का भेदभाव,यहां का न्याय।

यहां ना देखे कोई अच्छाई-बुराई,

यहां जात-पांत की ना होती कोई दवाई।

यहां तो सब देखते हैं बस कमाई॥

कोई गाड़ी में घूमा,कोई नंगे पांव चला,

अंत में गंगा मैया और एक मिट्टी का घड़ा।

गुरु का ना सम्मान रहा,

जिस मां की गोद में खेला,

उसी को ले आज वृद्धाश्रम की ओर चला।

रिया चौहान

कक्षा- आठवीं-अ प्रथम पाली

मेहनत

मेहनत तो रंग लाएगी, एक वक्त के बाद,

जैसी सूरज चमकता है, हर अंधेरे के बाद।

ना हो मायूस, ना बेउम्मीद,

न बेसहारा, न बेजमीर।

किस्मत तो रंग लाएगी,

मेहनत कशनिशां होने के बाद।

कर सौदा अपनी मेहनत का,

अपने वक्त के वास्ते।

तू इंसान है, जुल्म तेरा हथियार नहीं,

याद रख, यह बात भूलना कभी नहीं।

पीएम श्री के.वि.मुजफ्फरनगर

हाइका तनवीर

कक्षा- आठवीं अ प्रथम पाली

शेर का घमंड

एक जंगल में एक शेर रहता था जिसे अपनी ताकत पर बहुत घमंड था। वह सोचता था कि उससे ज्यादा ताकतवर कोई नहीं है। वह एक दिन शहर में गया और वहां घूमने लगा। वहां उसने राजा को हाथी पर सवार होते हुए देखा , तो उसने सोचा कि मैं भी हाथी पर सवार होकर चलूंगा। जंगल जाकर उसने सभी जानवरों को कहा कि हाथी पर सिंहासन लगाया जाए और सिंहासन लगाकर झटपट शेर छलांग लगाकर हाथी पर बैठ गया। हाथी पर बैठते ही जैसे ही हाथी चला सिंहासन नीचे गिर गया और शेर भी गिर गया। उसकी एक टांग टूट गई और सभी जानवर उस पर हंसने लगे।

कहानी का सबक – जिस का काम उसी को साजे, दूसरे की नकल करने से अपना ही नुकसान हो जाता है।

देव गर्ग

कक्षा-- सातवीं 'अ' प्रथम पाली

सूरज

रोज सवेरे आता सूरज , किरणों को बिखराता सूरज।

सूरज हमें संदेश सुनाता ,उठो साथियों हुआ सवेरा।

बिस्तर छोड़ो , चलो काम पर , रात ने अपना छोड़ा डेरा।

पंछी दाना चुगने जाए , गाय घास चरने को जाए।

बच्चे विद्यालय को जाएं , मम्मी उनका खाना बनाएं।

शाम को सूरज ढलने पर ,लौट सभी घर आते हैं।

खेलकूद के खाना खाते ,रात हुई फिर सो जाते हैं।

लेकिन सूरज कभी ना थकता , हर दम चलता बढ़ता जाता।

तुम भी बच्चों कभी मत थकना , हर दम चलना आगे बढ़ना।

अनुकीर्ति

कक्षा: आठवीं 'अ' प्रथम पाली

प्रीतम श्री के.वि. मुजफ्फरनगर

पानी बचाओ चित्रकला प्रतियोगिता

आलस का फल

रवि नाम का एक युवक था,जो हमेशा हर काम को टालता रहता था। चाहे वह स्कूल का होमवर्क हो, घर का कोई काम हो, या अपने दोस्तों के साथ किए गए वादे। वह हमेशा कहता , "कल कर लूंगा " या " बाद में कर लूंगा " । उस की यह आदत सबको परेशान करती थी , पर उसे खुद इसका अहसास नहीं था। एक दिन रवि को अपने स्कूल की सबसे महत्वपूर्ण परीक्षा की तैयारी करनी थी। उसने सोचा कि वह अगले दिन से पढ़ाई शुरू करेगा। लेकिन अगला दिन आया और उसने फिर से टाल दिया। इस तरह समय बीतता गया और परीक्षा का दिन आ गया। बिना तैयारी के रवि परीक्षा में बैठा और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या लिखना है। रवि को बहुत खराब अंक मिले और वह परीक्षा में फेल हो गया। उसके माता पिता और शिक्षक उससे बहुत निराश हुए। तब रवि ने सोचा कि उसे अब अपनी आदत बदलनी होगी। एक दिन उसके दादा जी ने उसे एक कहानी सुनाई। दादा जी ने बताया , " एक बार एक किसान था जो हमेशा अपने खेत का काम टालता रहता था। उसने सोचा कि वह अगले साल से अच्छे बीज बोएगा। लेकिन हर साल वह ऐसा ही करता रहा और उसकी फसल खराब होती गई। आखिरकार उसे समझ में आया कि समय की कीमत क्या होती है और उसने तुरंत काम करने की आदत डालली। इससे उसकी फसलें अच्छी होने लगीं और वह खुशहाल हो गया। " रवि ने दादा जी की कहानी से एक महत्वपूर्ण सबक सीखा। उसने ठान लिया कि वह अब कभी भी काम नहीं टालेगा। वह तुरंत अपने काम में जुट गया और धीरे धीरे उसकी मेहनत रंग लाने लगी। अगली परीक्षा में रवि ने अच्छे अंक प्राप्त किए और सभी ने उसकी प्रशंसा की। अब रवि जान चुका था कि आलस का फल हमेशा कड़वा होता है और समय का सही उपयोग करने से ही सफलता मिलती है। इस तरह रवि ने अपनी आलस की आदत को छोड़कर समय की कीमत सीखी और अपने जीवन को सफल बनाया।

दीपांशु शहरावत

कक्षा – दसवीं अ प्रथम पाली

जानवरों को बचाओ...

मानव सभ्यता की शुरुआत से ही मानव का वन्य जीवों के साथ संपर्क रहा है। औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के युग से पहले, मानव जीवन जानवरों पर निर्भर था। बड़े जानवर हमारे पूर्व जों के लिए खतरा थे , जो कभी गुफाओं में रहते थे और खानाबदोश थे। अंततः उन्होंने जीवित रहना, लड़ना और जानवरों की खाल को कपड़ों के रूप में , मास को भोजनयाचारे के रूप में और हाथी के तत्वों को बर्तनों या आभूषण के रूप में उपयोग करना सीखलिया। जैसे-जैसे मनुष्य विकसित हुए , जानवरों ने परिवहन , अर्थव्यवस्था , सामाजिक जीवन आदि जैसे विभिन्न पहलुओं में योगदान दिया है। जानवरों पर मनुष्यों की बढ़ती निर्भरता ने उनके अस्तित्व के लिए खतरा पैदाकर दिया है। इसीलिए उनका संरक्षण और किसी भी दुरुपयोग से सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है।

यशवी

कक्षा- 8A प्रथम पाली

मेरा स्कूल

कितना सुंदर है स्कूल, इसमें रंग बिरंगे फूल।
फूल सुहाने सब को भाते, उन्हें देखकर सब ललचाते।
टीचर हमको पाठ पढ़ाती,नई-नई बातें सिखलाती।
फूलों से गिनती करवाती, टॉफी देकर हमें खिलाती।

शिवि शर्मा

कक्षा- 2A प्रथम पाली

गर्मी

गर्मी के दिन आते है,
हमको बहुत सताते हैं।
कहाँ खेलने जाएं हम,
तेज धूप में निकलें दम।
खेल का मैदान गरम-गरम,
लू को आती नहीं शर्म।
कही चैन न पाते हैं,
मन ही मन झुंझलाते है।

अपेक्षा

कक्षा-2A प्रथम पाली

अच्छे बच्चे

अच्छे बच्चे रोज़ नहाते,
सूरज से पहले उठ जाते।
उठकर थोड़ी दौड़ लगाते,
नाखूनों को नहीं बढ़ाते।
अच्छे बच्चे मित्र बनाते,
झगड़ा करते इन्हें न पाते।

कनिष्का महारिया

कक्षा- 2A प्रथम पाली

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

भारत स्काउट गाइड गतिविधि

ढोंगी बिल्ला

एक दुष्ट बिल्ला था। वह एक बड़े पीपल के पेड़ के नीचे रहता था। उसी पेड़ पर एक चिड़िया एक गहरी खोकर बनाकर रहती थी। बिल्ला चिड़िया को खाना चाहता था परन्तु जब भी वह चिड़िया को खाने का प्रयास करता था तो चिड़िया अपनी खोकर में घुस जाती थी और बिल्ला उसे खाने में असफल हो जाता था।एकदिन बिल्ला ने एक तरकीब निकाली और वह ईश्वर का नाम जपने वाली माला लेकर पेड़ के नीचे बैठकर राम नाम जपने लगा (आसन लगाकर)। जब चिड़िया लौटकर अपने घर पर आई तो बिल्ले को ऐसा करते हुए देख कर बिल्ला से पूछा क्या माजरा है? बिल्ला ने बताया की आज उसे एक साधु महात्मा मिला जिसने उसे मांस मछली और पक्षी खाना छोड़कर राम नाम जपने की सलाह दी। महात्मा की प्रेरणा से मैं बदल गया हूँ और इस तरह राम नाम जपकर मैं अपने पापों से मुक्ति पाना चाहता हूँ। चिड़िया बिल्ला की बातों में आ गई और उससे महात्मा के बताए मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन मांगा। बिल्ला ने चिड़िया से कहा कि वह उनके सामने आंख बंद करके बैठ जाए और फिर बिल्ला उसे एक मंत्र बताएगा। जिसका जाप करने से चिड़िया मुक्त हो जाएगी, परन्तु जैसे ही चिड़िया आंख बंद करके बैठी,बिल्ला उस पर टूट पड़ा और उसे मारकर खा गया।

प्रेरणा- इस कहानी से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि दुष्ट व्यक्ति पर आसानी से विश्वास नहीं करना चाहिए।

कैथरीन प्रतिज्ञा कश्यप

कक्षा-2 A प्रथम पाली

नविका की नैनीताल यात्रा

एक बार की बात है, मैं अपने परिवार के साथ नैनीताल घूमने गई। वहाँ का वातावरण बहुत ही सुहाना था। वहाँ पर एक बहुत बड़ी झील थी। उसका नाम नैनीझील है।उसमें काफी सारी सुन्दर-सुन्दर मछलियां थीं। जिनको हमने खाना खिलाया। फिर हम नैना देवी मंदिर गए।वहाँ पर जाकर बहुत अच्छा लगा। फिर सब को बहुत भूख लगी थी इसलिए हम सबने खाना खायाऔर खाने के बाद हम अपने कमरे की तरफ चल दिए। नैनीताल यात्रा पर मैंने बहुत आनंद लिया और बहुत सारे जानवरों को भी देखा।

नविका

कक्षा- 2A प्रथम पाली

वीर सपूत विक्रम बत्रा

जब तूने देखा, तेरी भारत मां पर आया खतरा,

जान अपनी दाव पर लगा दी, वीर सपूत विक्रम बत्रा।

पीएम श्री के. वि. मु.

तू है देश का वीर सिपाही, तूने है सीने पर गोली खाई।

देश की लाज बचाने को है, तूने अमर गति पाई।

भारत मां का लाल है तू , वीर सपूत तू विक्रम बत्रा।

शेरशाह कहलाता था तू, मन का थातूथोड़ा मौजी।

देशभक्ति के भाव से भरा, तू ही था एक सच्चाफौजी।

ओजस शर्मा

कक्षा -2 अ प्रथम पाली

परीक्षा

खुद से लड़ना होगा, आग में जलना होगा।

परीक्षा का वक़्त है, दिन रात पढ़ना होगा।।

खाना पीना कम करो, टीवी मोबाइल से दूर रहो।

दिन रात चिंतन करो , पढ़ने में ही रमे रहो ।।

वक़्त ये कीमती है , चला गया तो न आएगा ।

पढ़ ले आज मौका है , नहीं तो फिर पछताएगा ।।

आज के त्याग का, फल कल मिलेगा ।

घर फिर तुम्हारा भी , बधाइयों से से सजेगा ।।

रिद्धिमा त्यागी

कक्षा-4 अ प्रथम पाली

उलझन

पापा कहते बनो डॉक्टर ,

माँ कहती इंजीनियर|

भैया कहते इससे अच्छा ,

सीखो तुम कंप्यूटर ।

चाचा कहते बनो प्रोफेसर

पीएम श्री के.वि. मुज़फ्फ़रनगर

चाची कहती अफसर |

दीदी कहती आगे चलकर,

बनना तुम्हें कलेक्टर |

बाबा कहते फ़ौज में जाकर ,

जग में नाम कमाओ |

दादी कहती घर में रहकर ,

ही उद्योग लगाओ |

सबकी अलग अलग अभिलाषा -,

सबका अपना नाता |

लेकिन मेरे मन की उलझन,

कोई समझ न पाता |

गौरांगी

कक्षा- 4 अ प्रथम पाली

शिक्षक

जब पहला पग पड़ा विद्यालय में,

तब मैं कोरा पन्ना था।

मुझे भी शिक्षा ग्रहण करके ,

एक अच्छा इंसान बनना था।

साथ दिया मेरे शिक्षकों ने ,

और सिखाई हर नई बात।

दृढ़ संकल्प लेना सिखाते हो ,

हमें संस्कारों का महत्व बताते हो।

भटके हुए हर रही को ,

सफलता का मार्ग दिखाते हो।

नज़र सब पर एक समान रहती,

ना कभी शिष्यों में भेदभाव करते हो।

किसी नादान से गलती हो जाए,

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

तो सीख देकर माफ़ करते हो।

हमारे छुपे गुणों को तराशकर ,

हम पर हुनर का रंग चढ़ाते हो।

लविश

कक्षा- 4 अ प्रथम पाली

मेरा स्कूल

सबसे प्यारा मेरा स्कूल ,

जिसको नहीं सकता में भूल।

माँ ने मुझे जन्म देकर ,

जीवन का पहला पाठ पढ़ाया |

स्कूल जाकर ही मैने ,

इस दुनिया का ज्ञान पाया|

खूब पढ़ो तुम और खूब बढ़ो तुम ,

शिक्षा यही देती हमारी शिक्षक |

तभी बढ़ेगा भारत सबसे आगे ,

जब देश का हर बच्चा शिक्षित होगा|

तभी तो मिटेगी देश की असाक्षरता ,

जब पूरा देश शिक्षित होगा |

सबसे प्यारा मेरा स्कूल,

जिसको नहीं सकता मैं भूल |

उदित बालियान

कक्षा- 4 अ प्रथम पाली

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

हिन्दी पखवाड़ा

बहादुर बच्चे

हम नन्हे मुन्ने हों चाहे ,

पर नहीं है किसी से कम |

आकाश तले जो फूल खिले,

वह फूल बनेंगे हम |

सूरज के घेरे में ,

तारों के घेरे में |

अब जान गया ये नील गगन ,

दिन रात तपेंगे हम|

आरव कुमार

कक्षा- 4 ब प्रथम पाली

मेरी मम्मी

मम्मी मेरी बड़ी सयानी,

ये कहती थी मेरी परनानी |

मुझको यह देख होती है हैरानी ,

झट पट घर का सारा काम करती ,

मम्मी मेरी बड़ी सयानी .....

ये कहती थी मेरी परनानी |

मैं हूँ बच्ची नादान, करती हूँ मनमानी ,

मम्मी मुझको डाँट लगाती ऐसे ,

जैसे बारिश का रिमझिम पानी|

मम्मी मेरी बड़ी सयानी....

ये कहती थी मेरी परनानी।

उनको अच्छी लगती है, मेरी हर नादानी.....

यशिका चौधरी

कक्षा- 5 अ प्रथम पाली

विद्यालय जाना सीखो

विद्यालय जाना सीखो ,

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

सच्चा आदमी तुम बनना सीखो।

पानी को बचाना सीखो ,

पेड़ों को लगाना सीखो|

गम को भुलाना सीखो ,

खुशियों को बाँटना सीखो।

सब को हँसाना सीखो ,

बहती हुई नाव को पार लगाना सीखो।

हार को जीत मैं बदलना सीखो ,

गलतियों को सुधारना सीखो|

कनिष्क कुमार महरिया

कक्षा- 4 ब प्रथम पाली

स्त्रियाँ

बहुत खूबसूरत होती हैं स्त्रियाँ

इसलिए नहीं कि तन सुंदर है उनका

बल्कि इसलिए क्योंकि ढाल लेती है खुद को

कभी पुरुष की कमाई के अनुसार

कभी रिश्तो की दुहाई के अनुसार

कभी दूसरे घर के हिसाब से

कभी दीवारों-दर के हिसाब से

कभी अपनी आपबीती के कारण

तो कभी रिवाज़ और रीति के कारण

समन्वय की एक मूरत है वो

इसीलिए बहुत खूबसूरत है वो॥

श्रीमती अंतु

प्राथमिक शिक्षिका

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

संस्कृति हमारी

कभी विश्वगुरु था अपनाभारत, ये सब पे भारी।
क्या हो गया है हमको, मिटी संस्कृति हमारी॥
विधवा शहीद की जब ताबूत लिपटके रोती।
तिरंगा तो होता उसमेंx, पर लाश नहीं है होती॥
अंतिम मिलन की क्या वो, नहीं थी अधिकारी।
क्या हो गया है हमको, मिटी संस्कृति हमारी॥

सम्मान मे नारी के तो रामायण, महाभारत होते।
किसने बनाया दुर्बल, लिए मोमबत्ती है रोते॥
ये देखकर हँस रहे है, वो पापी अत्याचारी।
क्या हो गया है हमको, मिटी संस्कृति हमारी॥

किसी के दिल में भी तो शोले नहीं भड़कते।
ठंडे हुए है सारे, अंगार नहीं दहकते॥
फूलों की किसको चिंता है, तोड़ी कलियाँ सारी।
क्या हो गया हैहमको, मिटी संस्कृति हमारी॥

बोली उन्हीं की लगती, जो भाव में होते सस्ते।
महंगे बाज़ारों से तो, चलते है लोग बचके॥
स्वाभिमान से है जीना 'मावी' ये ज़िंदगी सारी।
क्या हो गया है हमको मिटी संस्कृति हमारी॥
कभी विश्वगुरु था अपना, भारत ये सब पे भारी।
क्या हो गया है हमको, मिटी संस्कृति हमारी॥

मोहित कुमार मावी
कार्यानुभव शिक्षक

पीएम श्री के.वि. मुज़फ्फ़रनगर

क्यूँ है ?

रुख-ए-गुलजार पे रंज सा छाया क्यूँ है?

इन हवाओं ने मुझे पास बुलाया क्यूँ है?

ऐ खुदा बख्शना मुझको मैं बताऊं कैसे-2

उसके सजदे में ये सर मैंने झुकाया क्यूँ है?

रुख-ए-गुलजार पे...........................

यूं तो भीड़ बहुत दुनिया के बीराने में-2

जिस तरफ देखूं लगे उसका ही साया क्यूँ है?

रुख-ए-गुलजार पे...........................

कौन कहता है मैं अकेला ही चला जाऊंगा-2

अपनी आँखों में तेरी रूह को बसाया क्यूँ है?

रुख-ए-गुलजार पे...........................

श्री कृष्ण गोपाल

पुस्तकालय अध्यक्ष

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

घमंडी खरगोश

एक बार खरगोश ने कछुए से कहा कि चलो दौड़ लगाते है |कछुआ बोला ठीक है | दोनों भालू के पास गये और कहा कि हमारी दौड़ करा दो |भालू बोला ठीक है | दौड़ शुरू हो गई|

खरगोश आगे निकल गया औए कछुआ पीछे रहे गया | खरगोश ने सोचा कि कछुआ तो पीछे रह गया है , मैं थोड़ा आराम कर लेता हूँ | बंदर ने खरगोश को रोका कि दौड़ के बीच में आराम मत करो, लेकिन खरगोश ने उसकी बात नहीं मानी और सो गया |यह सब एक चिड़िया भी देख रही थी |रास्ते में कछुए को एक लड़की मिली और वह भी कछुए के साथ दौड़ने लगी | खरगोश पीछे रह गया और कछुआ जीत गया | भालू ने फैसला सुनाया कि कछुआ दौड़ में जीत गया और खरगोश हार गया है|

शिक्षा – हमें कभी भी अपने पर घमंड नहीं करना चाहिए |

यश कुमार

कक्षा दो ब द्वितीय पाली

राष्ट्रीय युवा दिवस

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय
मुज़फ़्फ़रनगर
राष्ट्रीय युवा दिवस
National Youth Day
(12-01-2024)

PM SHRI
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय
मुज़फ़्फ़रनगर

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय
मुज़फ़्फ़रनगर
राष्ट्रीय युवा दिवस
National Youth Day
(12-01-2024)

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय
मुज़फ़्फ़रनगर

चकई के चकदुम

चकई के चकदुम, चकई के चकदुम
भैया का जन्मदिन, केक खाएं हम तुम |
चकई के चकदुम , चकई के चकदुम,
मामा की शादी , लड्डू खाएं हम तुम |
चकई के चकदुम, चकई के चकदुम ,
बारिश का मौसम ,आओ भीगें हम तुम |
चकई के चकदुम, चकई के चकदुम ,
छुट्टियों का मौसम, खूब खेलें हम तुम |
चकई के चकदुम , चकई के चकदुम ,
खेल खतम भैया , मस्ती करें हम तुम

अयांश त्यागी
कक्षा-2 ब द्वितीय पाली

गुरु महिमा

हो बुध्दि चाहे कितनी तीक्ष्ण आप पढ़ाई आती नहीं।
अध्यापक की विधिवत विद्या अंत श्वास तक जाती नहीं।
नैया को हो पार लगाना, पार न हो यदि केवट नहीं।
क्या करेगा वैद्य विशारद यदि पास में औषध नहीं।
ऐसा ही है ज्ञान प्रभु का, बिना गुरु समझ आता नहीं।
कहे संत कबीर जब तक गुरु कर कृपा, तब तक विधि बताता नहीं।
जिसने धरती सकल बनाई, ठंडा मीठा पानी भी।
जिसने जीव आकाश बनाई, दी है तुम्हें जवानी भी।
लिख लिख महिमा लेखक हारे, गा गा ग्रन्थ भी हारे हैं।
जिसने सुंदर वायु दी है, दिए चंद्रमा तारे हैं।
कान दिए हैं सुनने को, नयन दिए सुहाने दर्शन को।
जिसने सुंदर विद्या दी है, बोलने और बुलाने को।

जिसने सुंदर पैर बनाएं, चलने और चलाने को।

इसलिए इस ईश्वर को हम भी याद करें।

आओ सब मिलकर उस ईश्वर का धन्यवाद करें।

वंदना पटेल

कक्षा 6 अ द्वितीय पाली

बचपन की यादें

मेरी यादें मेरा बचपन, कहाँ गया वो मस्ती का मौसम |

अम्मा का डाँटना, बाबा का मनाना,

दादी का खिलाना, दादा का घुमाना ||1||

पल पल याद करती हूँ, मैं बीता हुआ जमाना,

मेरी गुड़िया की शादी, शादी में नाच गाना ||2||

पल पल याद करती हूँ, मैं बीता हुआ जमाना,

भाईया के संग लडना, फिर उसका मुझे मनाना ||3||

पल पल याद करती हूँ, मैं बिता हुआ जमाना,

बस कुछ बातों से खुश हो जाना,

जैसे दादी से कहानी सुनकर सो जाना ||4||

पल पल याद करती हूँ मैं बीता हुआ जमाना,,,,,,,,,

मलायज़ा खान

कक्षा- 7 ब द्वितीय पाली

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

भारतीय भाषा उत्सव

माँ

घर वापस आने में हो जाती पल भर भी देर,

बेचैन हो जाती है माँ, पूछती है सवाल इतने,

साँस भी नहीं लेती है माँ...................

चाद सेकंड को भी, घंटे में बदल देती है माँ,

बेटी की खुशियों में ही, अपनी खुशी ढूँढ लेती है माँ।

पीले हाथ देख बेटी को, फफक कर रो पड़ती है माँ,

अपने कलेजे के टुकड़े को, जाने कैसे भेज देती है माँ.......................

वैष्णवी चौहान

कक्षा सातवीं ब द्वितीय पाली

मेरी स्कूल पत्रिका

मेरी स्कूल मैगज़ीन, कितनी प्यारी है......

दिखने में लगती है सुंदर,

पढ़ने में भी न्यारी है।

लेख, कहानी, कविता आदि बच्चों ने छपवाई हैं,

कहीं आँखों में आँसू आए,

कहीं हँसी भी आई है।

हम सब मिलकर इसको देखें, औरों को भी दिखलाएँ,

लेख कहानी आदि पढ़कर,

मैगजीन की मेहनत को मिलकर सफल बनाएँ।

रुहीन पुंडीर

कक्षा- 9 द्वितीय पाली

केवीएस स्वर्ण जयंती

सूरज की किरणें

सूरज की किरणें,
सोने की धूल सी,
छूती हैं सबको,
दिल में खुशी भरती हैं।
अंधेरा छंट जाता है,
जागती है दुनियां,
जीवन में रंग भरती हैं,
सूरज की किरणें।
पौधे मुस्कुराते हैं,
पक्षी गाते हैं,
नई शुरुआत होती है,
सूरज की किरणें।
हर कदम पर उम्मीद जगाती हैं,
सूरज की किरणें,
हमें जीने का जोश देती हैं,
सूरज की किरणें।

रुहीन पुंडीर
कक्षा- 9 द्वितीय पाली

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

संस्कृत अनुभाग

स्मृतिसौरभम्

आनन्दगंगा वहतीव यत्र

सौन्दर्यशिप्रा सरतीव यत्र।

बन्धुत्वसिन्धुश्चलतीवयत्र

संस्कारशुद्धदोऽस्ति से वो विभागः ॥

विलोक्य विद्यां प्रति कर्मनिष्ठां

चेष्टां च सर्वा' निजनेत्रकान्त्या ।

जातं हि चित्तं सुखमण्डितं मे

विद्या यतो जननीव जीर्णा ॥2

शुभ्रा सुचित्रा सरलासुभद्रा

विभागदायित्वानगाधि रूढा । बन्धुत्वविद्याविषये प्रवीणा

तां भरती स्नेहवती स्मरामि ॥३॥

या माधवी माधव भावसिकता

सदानुरक्ता अध्ययने अतिशान्ता ।

विद्योतते या प्रतिभवे साक्षात

सा स्नेहमूर्तिमनसि स्थिताऽस्ति॥ 4

या भास्वती भावमयी विनम्रा

नम्रा यथा कोमलकाव्यवल्ली।

शकुन्तला शान्तसमुद्रशोभा याज्ञानेशभ्रास्ति विभागरत्नम् ॥5

यशवी

कक्षा-आठवीं अ प्रथम पाली

जलम्

जलम् एव जीवनम् । पृथिव्यां ७० %जलम अस्ति । जलेन एव सर्वजीवानां जीवनं सम्भवति । संस्कृते जलस्य बहुनि नामानि सन्ति यथा -उदक ,नीर ,वारि तथा च तोयम् ।वयं शुद्ध जलं केवलं वर्षायाः

विन्दामः । एतत्जलं नदीषु ,तडागेषु ,सरोवरेषु च एकत्रितं भवति । एतत् जलं ,अस्माकं क्षेत्राणि उद्यानानि च सिञ्चति । नदीनां तीरेषु नौकानि नगराणि च वर्तन्ते । जलस्य उपयोगं तु सर्वत्रैव भवति। जलेन तृष्णायाः निवारणं भवति। जलस्य पानेन शीतलता अनुभूति ,उत्साहं च वर्धते। पानाय , भोजननिर्माणाय ,भोजनाय च जलस्य आवश्यकता अस्ति । स्नानाय ,वस्त्रप्रक्षालनाय ,गृहस्वच्छतायै च जलम उपयुज्यते । नगरस्वच्छतायै ,उद्योगेभ्यः ,पशुपालनाय च जलस्य आवश्यकता अस्ति। जनाः जले वस्त्राणि तथ च पत्राणिक्षालयन्ति । अनेन जलं दूषितं भवति । दूषितजलस्य कारणात् हानिः भवति।

अनुपम गोस्वामी

कक्षा- आठवीं अ प्रथम पाली

प्रकृति :

प्रकृतिः माता सर्वेषाम्

बहूनाम अपि फलानाम्।

बहूनाम अस्ति वृक्षाणाम्

पुष्पाणाम् चापि मानेयम्।।

भ्रमराणां ,पशूनां

पक्षिणां च मानास्ति।

जनेभ्यः जीवनं सदा

ददाति प्रकृतिः माता ||

अस्ति सा नु मनोहरी

मा नृणाम् अपि मानास्ति

प्रकृतिः माता सर्वेषाम्

नमोस्तु ते मात्रे प्रकृत्यै |||

दर्शिका

कक्षा- आठवी 'ब' प्रथम पाली

पीएम श्री के.वि.मुज़फ़्फ़रनगर

पराक्रम दिवस

CHANDAYAAN
3
ISRO
भारत
INDIA

DEVELOPED
INDIA
MISSION
Electric Car

लघुकथा -शृगालस्य चतुरता

एकदा एकः वायसः पिष्टकं चोरितवान्। पिष्टकं चोरयित्वा सः एकस्य वृक्षशाखायाम् उपविशति स्म। वृक्षतले शृगाल :एक :उपायतः आसीत्। वायसमुखे पृष्टकं दृष्टवा तं लालसा अभवत् चतुरः सः श्टगाल :वायसं प्रति उद्देश्यं कृत्वा गायनासीत " अहो !अद्भुत सुंदरः विहग :एषः। कण्ठस्वर :अपि मधुरः भवेत "...न जाने कथं मधुरः नु गायतिअयम्। वायस :स्वीय प्रशंसां श्रुत्वा गद्गद नंदित अभवता पुलकितः अभवत्।अतः सः गीत गायनाय यदा हि चंचु विस्फारितम् अकरोत् तदा पिष्टकम् अधः पतितवान्। अतः किम !श्टगाल :पिष्टकं नीत्वा झटिति धावितवान्।

अंशिका पुण्डीर

कक्षा- आठवीं अ प्रथम पाली

उद्यानम्

अस्माकं विद्यालस्य समीपे एकं रम्यंउद्यानम्अस्ति। इदम्उद्यानम् अतीव विशालम् सुन्दरं चास्ति। अस्मिन् उद्याने विविधा :वृक्षा :पादपा :लताश्च सन्ति। पादपेषु विविधानि पुष्पाणि विकसितानि सन्ति। वृक्षेषु विविधाः खगा :कलरवं कुर्वन्ति। जनाः प्रात :सायं चात्र भ्रमणाय प्रतिदिनं आगच्छन्ति। आस्मिन् उद्याने बालकाः बालिकाश्च क्रीडन्ति। उद्यानस्य वातावरण स्वच्छ वर्तते।

अनम चौधरी

कक्षा- सातवीं ब प्रथम पाली

सर्वे भवन्तु सुखिनः

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

अर्थ- सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े।

आराध्या शर्मा

कक्षा- 7 ब द्वितीय पाली

हस्तकुटुम्बकम्

एषःस्नेहालुःतातः – अङ्गुष्ठः ।।

निकटेनिवसतिननुमाता – तर्जनी ।।

ज्येष्ठापुत्रीदीर्घतमा - मध्यमा।।

तस्याःभगिनीमनोरमा – अनामिका ।।

कनिष्ठबालाअन्तेच – कनिष्ठिका ।।

अमन सोबति

कक्षा-6 ब द्वितीय पाली

पीएम श्री के.वि. मुज़फ्फरनगर

English Section

ADOLESCENCE

Adolescence is a phase used to describe the stage of life that occurs between childhood and maturity. However, the term adolescence is often used to characterise the transition stage betweenchildhood and adulthood. It describes a very diverse reality. Both the word “teenage years” and“puberty” are used to describe adolescence, however, neither of these words include adolescence the hormonal changes that occur in early adolescence are referred to as puberty, and the era of adolescence can last well beyond the teenage years. Truly, there is no universally accepted scientific explanation of adolescence or an age limit for it. During the journey from childhood to adulthood nearly all adolescents go through significant developmental stages. Adolescence varies greatly throughout cultures, time and among individuals. It is a time when feelings are at their peak. It is one of the most dramastic stages of human development, marking the transition from childhood to adulthood.

Yashvi

Class- VIII A first shift

Tree Plantation

Trees keep the earth cool, reducing global warming, and are important to prevent soil erosion and flood. Forests are responsible for maintaining the climate and reducing the solar radiation rate. They provide shelter to many birds and animals and help control the risk of landslides and avalanches. They help maintain environmental balance and are needed for agricultural production. They provide housing to millions of species that protect us from diseases and keep the streets and cities cool. Do tree plantation to make our nation green and clean.

Anupam Goswami

Class: VIII A FIRST SHIFT

NCC ACTIVITY

THERE ARE MANY INSPIRATION'S IN INDIA LIKE A.P.J. ABDUL KALAM, SWAMI VIVEKANAND , DOCTOR BHIM RAO AMBEDKAR AND MANY OTHERS. IN THIS I TELL YOU ABOUT SOME OF INSPIRATIONS.

Avul Pakir Jainulabdeen Abdul Kalam

Dr. APJ Abdul Kalam, fondly remembered as the Missile Man of India, was an exceptional scientist and the 11th President of India. Hailing from a humble background in Rameswaram, Tamil Nadu, Kalam's journey from selling newspapers to becoming a pivotal figure in India's space and missile programs is truly awe- inspiring. He played a crucial role in the development of India's indigenous satellite launch vehicle, Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV), and ballistic missile systems. Kalam's leadership style was characterised by his humility, dedication, and determination. He believed in the power of education and youth, often interacting with students to share his knowledge and ideas. His contributions to India's defence and space technology earned him numerous awards and accolades, and he remains a role model for aspiring scientists and leaders worldwide.

SWAMI VIVEKANAND

One of the most well-known spiritual leaders, Swami Vivekananda was a prodigious thinker, a master orator, and a fierce patriot. He is a well-known individual who is credited with introducing Hinduism to the West. In Chicago, around 1893, he represented Hinduism in the Parliament of Religions, which just not made him popular but an impactful personality and undoubtedly the greatest figure at the Parliament. He was born into an aristocratic Bengali family on 12 January 1863, in Kolkata (earlier Calcutta) and was originally named Narendra Dutt. Swami Vivekananda, a social reformer and spiritual guide, established the Ramakrishna Mission on May 1, 1897, with the intention of bringing about both personal salvation and a better world. Instead of emphasising particular people, he always concentrates on teaching universal concepts. His mind was astounding. His speeches, books, letters, poems, and thoughts inspired young people all across the world in addition to those in India. He spread the notion that the divine, the absolute, exists within all human beings regardless of social status and that seeing the divine as the essence of others will promote love and social harmony. Vivekananda saw truth, purity, and unselfishness as qualities that bolstered the intellect and connected morality to mental power. He counselled his followers to practise shraddha (faith), to be holy, and to be selfless.

Brahmacharya was advocated by him, and he saw it as the basis of his eloquence and mental and physical fortitude.

BHIM RAO AMBEDKAR

Bhimrao Ram ji Ambedkar, also known as Baba Saheb Ambedkar, was born on April 14, 1891, at Mhow in Madhya Pradesh, India. He was a good student earning doctorates from both London University and Columbia University of London. He gained a reputation as a scholar for his research in law, economics, and political science. In his early carrier, he was an editor, economist, professor, and activist who was against the discrimination Dalits faced because of caste. Dr.B.R.Ambedkar 's later career included participating in political activities. Ambedkar was involved in campaigning and negotiation of India's Independence. After Independence, he became the chairman of the drafting committee of the Indian Constitution. After India's Independence, he was the first minister of law and justice and is considered to be the architect of the constitution of India. In 1956 he converted to Buddhism, resulting in the mass conversion of Dalits. In 1948, Ambedkar suffered from diabetes. After fighting diabetes for almost seven years, Ambedkar passed away in his sleep on December 6, 1956 at his home.

SUNDAR PICHAI

Sundar Pichai (born June 10, 1972, Madras [nowChennai], Tamil Nadu, India) is an Indian-born American executive who was CEO of both Google and its holding company, Alphabet. As a boy growing up in Madras, Pichai slept with his brother in theliving room of the cramped family home, but his father, an electrical engineer at the British multinational GEC, saw that the boys received a good education. At an early age Pichai displayed an interest in technology and an extraordinary memory, especially for telephone numbers. After earning a degree in metallurgy (B.Tech., 1993) and a silver medal at the Indian Institute of Technology Kharagpur, he was awarded a scholarship to study at Stanford University (M.S. in engineering and materials science, 1995). He remained in the United States thereafter, working briefly for Applied Materials (a supplier ofsemi conductormaterials) and then earning an M.B.A. (2002) from the WhartonSchool of the University of Pennsylvania. Following a short stint at the management consulting firm McKinsey, Pichai joined Google in 2004 as the head ofproduct management and development. He initially worked on the Google Toolbar, which enabled those using the Microsoft Internet Explorer and Mozilla Firefox Web browsers to easily access the Google search engine. Over the next few years, he was directly involved in the development of Google's own browser, Chrome, which was released to the public in 2008. That same year Pichai was named vice

president of product development, and he began to take a more-active public role. By 2012 he was a senior vice-president, and two years later he was made product chief over both Google and the Android smartphone operating system. In 2011 Pichai reportedly was aggressively pursued for employment by micro blogging service Twitter, and in 2014 he was touted as a possible CEO for Microsoft, but in both the instances he was granted large financial packages to remain with Google. He also was known to have helped negotiate Google's $3.2 billiondeal to acquire Nest Labs in 2014. Therefore, when Google cofounders Larry Page and Sergey Bring announced the creation of Alphabet Inc., in August 2015, it came as no surprise to industry insiders that Pichai was named CEO of Google, which was reorganized as a subsidiary. In December 2019 he also was named CEO of Alphabet, replacing Page, who stepped down.

DHAIRYA SHARMA

CLASS 7A FIRST SHIFT

CHANGING FATE

It is a story about time travel in which a person tries to go back in life to change her father's fate and ends up discovering things about time travel and the universe. This story reflects what I, the writer, think about the grandfather paradox. In 2080, a girl named Sneha travels back in time, about 16 years to when her father, Kartik, was 36 years old. Sneha's grandfather always taught her father that boys are better than girls and that girls leave home after marriage while boys stay with their parents and take care of them when they get old and can't do anything by themselves. When her father got married and had Sneha, he refused to have more kids, but the grandfather pressured him to have a boy. When Sneha turned 8, the grandfather tried to kill her, saying it's better to have no kids than just a girl. Her father intervened and died in the process. After her father's death, she ran away from home, fearing for her life. A couple found and adopted her. She excelled in her studies and dedicated herself to learning about time travel so that she could build a time machine. Her hard work paid off, and she built a time machine when she grew up. Sneha and her father had a terrible life, so she decided to go back in time to change her father's fate so that he wouldn't die. When she arrived, she started looking for her home around the city but couldn't find it because she was only 6 years old at that time and didn't remember the address. Also, since someone else had adopted her and she had moved to another city, she was now completely unfamiliar with the city she used

to live in. After asking around for some time, she finally found her home and waited for the moment her grandfather was about to shoot. She threw a glass bottle at the bullet and ran away, thus saving her father. Suddenly, it occurred to her that if she saved her father, she never got adopted and never built a time machine. If she never built a time machine, she never went back in time. If she never went back in time, she never saved her father. This paradox troubled her. In an instant, she disappeared and returned to her time, but nothing had changed in her time. Then she remembered a theory of the universe: if something has happened, it cannot be changed, and if we try to make a change, a new world will start from that point, leaving the present unchanged. She felt sad that her father was still dead in her world but also happy that he was alive in another world.

VINDHYA BALIYAN

CLASS- IX A FIRST SHIFT

"Single-Use Plastics: A Threat to Our Planet's Future"

In our modern world, single-use plastic has become a significant part of daily life. While it offers convenience, it also causes substantial problems. These plastics, such as bottles, bags, and packaging, persist for a long time after we use them. They do not break down easily and end up filling landfills and polluting oceans and rivers. This has devastating effects on animals and plants that inhabit these environments, and it can even impact our health when tiny plastic particles enter our food and water. The chemicals in plastic can also be harmful, leaking into what we eat and drink. Although we attempt to recycle, it is challenging to do so with single-use plastics. Many end up as trash or litter because they are difficult to manage. Furthermore, the production of these plastics consumes a significant number of natural resources, such as oil and gas, which are dwindling. In conclusion, while single-use plastic provides short-term convenience, its long-term environmental and health impacts are profound. Addressing these challenges requires collective action from individuals, businesses, and governments to reduce plastic consumption, promote sustainable alternatives, and improve waste management practices.

Dipanshu

CLASS XA FIRST SHIFT

Earth

Lives are crying because it's not clean

Earth is drying, it's not green.

Earth is our dear mother don't pollute

She has given us food & shelter, just salute.

Because of global warming, it's in danger,

Let's save it by becoming a strong ranger.

With melting snow one day it will sink

How can we save it, just think

Trees are precious, preserve them

Water is treasure, reserve it.

Astha

Class 5 A FIRST SHIFT

Tree

Do not cut me,

Cried the tree

Because I give you rain free.

In my cool shade you rest;

Eat my fruits that are best.

Take in my fresh smell

Let me live my life well.

Nikhil Sonker

CLASS 5A FIRST SHIFT

पीपल श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

LIBRARY ACTIVITY

THE MAGICAL FOREST

In a forest deep and green,

Where sunlight makes the leaves gleam,

There's a world of magic unseen,

That's more than just a dream.

Butterflies flutter by with grace

In a joyous, colorful chase.

Rabbits hot, squirrels leap

In this enchanted place so deep.

The flowers talk in whispers sweet

to the buzzing bees they greet

trees stand tall with wisdom old

Their stories waiting to be told.

A sparkling stream flows gently by

Reflecting the bright bluesky

Fish swim with a playful cheer

In waters cool and crystal clear.

A wise old owl with eyes so bright,

Hoots softly in the quiet night.

Bats take flight under the moon,

singing their mysterious tune.

In this forest, wild and frees.

दीप्ति श्री के.वि. मुजफ्फरनगर

There's magic for you and me.

Close your eyes and take a peek,

At wonders you can't wait to seek.

So next time you take a walk

Listen to the forest talk

In its branches you may find

A secret world of every kind.

Aksharmani

CLASS 5A FIRST SHIFT

THE LION AND THE COWS

Once upon a time there lived four cows in the forest .Everyday they used to graze together in a particular spot. They were all friends. One day a lion saw the cows grazing together. The lion wanted to eat them so he thought to catch them. When the cows saw the lion all of them fought with him. The lion had to run away. A few days passed and the cow quarreled between themselves and started grazing separately. One day one by one the lion killed all of them.

Moral – Unity is strength.

Aenen Fatima

CLASS 4B FIRST SHIFT

A broken piece...

A shard of glass, a fragment small,

Once part of something, now lies in fall.

A reflection of what's been lost,

A piece of something that will never be whole again, at any cost.

Its edges sharp, its surface worn,

A reminder of what’s been torn.

From the whole, it’s now apart,

A broken piece, a shattered heart.

Yet even in its broken state,

It still reflects a glimmer of its former fate.

A reminder that even in decay,

There still a beauty that never fades away.

Ruheen Pundir

Class- 9th 2nd shift

Why democracy is important

Today I am going to talk about a topic which is that most important for a developing country like India. Democracy has been the best form of government since ancient times. In some countries, politicians used dirty tricks or malpractices to make themselves less accountable for the citizens. In fact many use tricks to brainwash the citizens and people become their blind devotees of their ruler for example North Korea and Germany. So it’s important for every citizen to know the importance of the democracy. In our country “We the people of India should also remember that patriot must be ready to defend our country against any unlawful activities anytime. This is a topic which is less spoken but it is very important for every country. It gives us right to question our government over the government policies. Hoping that youth of our country will always be ready to protect and strengthening our democracy.

Prashita Srivastava

Class 9B

BEAUTY OF LIFE

The beauty of nature is all around the flowers are blooming on the ground There's beauty from ouroceans blue just look around there's something new All the mountains stands so tall as children lookwith awe Our wildlife is really great each animal has it's own mate. The beauty of people everywhere Thebeauty in children as they share the simple beauty of a rose or watching two kittens as they doze Thebeauty in life is forever us it in life to be your lever Whenever you are feeling down just take a good lookall around Then a smile will come across your face because God created such a beautiful place!

Jiya Sehrawat

Class -9th B 2nd shift

The life of a book

I rest on a shelf, among many of my kind, waiting for the gentle touch of a reader. My cover is bright and inviting, my pages filled with tales of adventure and wisdom. Today, a young girl with curious eyespicks me up. Her fingers trace my spine, and as she opens me, I feel the rush of air through my pages. She delves into my story, losing herself in my world. Every turn of the page is a heartbeat, every word awhisper. As the day ends, she places a bookmark within me, a promise to return. Next morning whenthe library opened again with a silent hustle, I could feel the soft cold breeze hitting my cover...Iremained there at my shelve with my fellow books, waiting eagerly for the girl to arrive again, I wonderif she would take me with her or would she read me here in this library, although the cozy appearanceof library attracts readers and forces them to keep coming here constantly...I always keep thinking ofmy readers and wonder if they like to read me? I question myself if my stories help them or leave any sense of contentment over their hearts...as I was lying there talking silently to my self...I heard a soft welcoming voice, it was the girl I was waiting for...she picks me up with a soft smile on her face, I was ready to get read by her, I had never met such a sweet reader ever. The time passes by, her touch wasaffectionate to my pages. I hope I could meet someone like her again until I turn old.

Niharika

Class - X 'B' 2ND SHIFT

SUNSET

During sunset, the sun casts a warm glow over the white sand. The sound of waves filled the air as I dug my toes into the sand and breathed in the sea breeze.

Avanya tyagi

CLASS- X B 2ND SHIFT

The Night....

The night descends with gentle grace,
A soothing balm for the soul's dark place,
The stars appear like diamonds bright,
A celestial show, a wondrous sight.

The world is hushed, a peaceful sight,
As moonbeams dance across the night,
The darkness shines with gentle light,
A time for dreams, a time for delight.

So let us embrace the night's sweet charm,
And let our spirits soar, free from alarm,
For in the darkness, we find the light,
That guides us through the darkest night.

Ruheen Pundir

CLASS- 9th 2ND SHIFT

IMPORTANCE OF WILDLIFE

Wildlife plays a crucial role in maintaining the balance of ecosystems and biodiversity. It is essential forthe health of planet and for the well-being of all living organisms, including humans.Wildlife contribute to various aspects of our lives in many waysFirstly, wildlife helps in regulating the environment by playing key roles in processes such as pollinationseed dispersal, and nutrient cycling. These activities are vital for the growth of plants and thesustainability of ecosystems. Wildlife species are often indicators of the overall health of an ecosystem.Their presence or absence of can reflect changes in the environment helping us understand and addressenvironmental issues.

Wildlife has significant cultural and aesthetic value.Protecting wildlife is crucial for ensuring the long term sustainability of our planet. By valuing andprotecting wildlife, we can maintain a healthy environment, promote sustainable development andsecure a better future for all living beings.

Name - Anshika Verma

Class – X B 2ND SHIFT

A Woman's Grace

In fields of gold, beneath the sun embrace,

There blooms the timeless beauty of her grace.

A spirit strong, yet gentle as the dawn,

She weaves the world with threads of courage drawn.

With wisdom deep as ancient ocean lore,

She stands a pillar, steadfast evermore.

Her heart, a beacon in the darkest night,

Guides us through with love enduring light.

In every role, she masters every art,

A warrior fierce, with tenderness of heart.

Her dreams take flight on wings of hope and fire,

Inspiring all to reach and to aspire.

Through trials faced, she rises, never bows,

With strength that even mountains must allow.

A tapestry of resilience and care,

She leaves her mark, a legacy so rare.

For in her eyes, the universe unfolds,

A tale of life, in endless stories told.

So here's to women, wondrous, wise, and true,

The world is brighter for the light of you.

Himanshi Tarar

TGT (science) cont.

पीएम श्री के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

HAPPINESS ZONE
HAPPY WOMEN
पीएम श्री केन्द्रीय विद्या
मुज़फ़्फ़रनगर
अन्तर्राष्ट्रीय महिल
International Wom
March 8t
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय
मुज़फ़्फ़रनगर
अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस
International Woman's Day
March 8th

..... इतिश्री.....